SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

नागार्जुन के उपन्यासों में नारी सम्बन्धी समस्याएँ : एक अध्ययन

रश्मि द्विवेदी, शोधार्थी, हिन्दी साहित्य,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
अवधेश कुमार चंसौलिया, (Ph.D),
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डबरा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
रश्मि द्विवेदी, शोधार्थी, हिन्दी साहित्य,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
अवधेश कुमार चंसौलिया, (Ph.D),
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डबरा,
मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/02/2021
Revised on : -----
Accepted on : 18/02/2021
Plagiarism : 01% on 11/02/2021

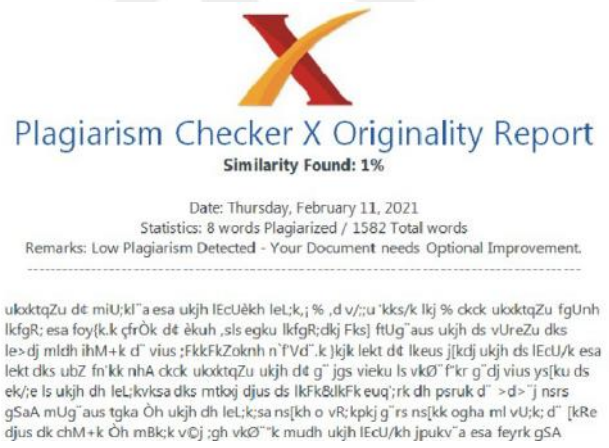
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Thursday, February 11, 2021
Statistics: 8 words Plagiarized / 1582 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

ukxktqZu d¢ miU;kl"a esa ukjh lEcUèkh leL;k,¡ % ,d v/;;u 'kks/k lkj % ckck ukxktqZu fgUnh lkfgR; esa foy{k.k çfrÒk d¢ èkuh ,sls egku lkfgR;dkj Fks} ftUg"aus ukjh ds vUreZu dks le>dj mldh ihM+k d" vius ;FkkFkZoknh n`f"Vd".k }kjk lekt d¢ lkeus j[kdj ukjh ds lEcU/k esa lekt dks ubZ fn'kk nhA ckck ukxktqZu ukjh d¢ g" jgs vieku ls vkØ"f"kr g"dj vius ys[ku ds ek/;e ls ukjh dh leL;kvksa dks mtkxj djus ds lkFk8lkFk euq';rk dh psruk d" >d>"j nsrs gSaA mUg"aus tgka Òh ukjh dh leL;k;sa ns[kh o vR;kpkj g"rs ns[kk ogha ml vU;k; d" [kRe djus dk chM+k Òh mBk;k v©j ;gh vkØ"'k mudh ukjh lEcU/kh jpukv"a esa feyrk gSA

शोध सार

बाबा नागार्जुन हिन्दी साहित्य में विलक्षण प्रतिभा के धनी ऐसे महान साहित्यकार थे, जिन्होंने नारी के अन्तर्मन को समझकर उसकी पीड़ा को अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण द्वारा समाज के सामने रखकर नारी के सम्बन्ध में समाज को नई दिशा दी। बाबा नागार्जुन नारी के हो रहे अपमान से आक्रोशित होकर अपने लेखन के माध्यम से नारी की समस्याओं को उजागर करने के साथ–साथ मनुष्यता की चेतना को झकझोर देते हैं। उन्होंने जहां भी नारी की समस्यायें देखी व अत्याचार होते देखा वहीं उस अन्याय को खत्म करने का बीड़ा भी उठाया और यही आक्रोश उनकी नारी सम्बन्धी रचनाओं में मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य नागार्जुन के उपन्यासों में नारी सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द

नागार्जुन, नारी सम्बन्धी समस्याएं.

प्रख्यात लेखक नागार्जुन का पूरा नाम मिश्र "यात्री" नागार्जुन है। नागार्जुन के अनेक उपनाम थे, जैसे– वैद्यनाथ मिश्र, यात्री, नागार्जुन बाबा और आधुनिक कबीर आदि और ये सभी उपमान कोई न कोई कारण अवश्य रखते हैं। उनका पहला साहित्यिक नाम यात्री था, संस्कृत और मैथिली में उन्होंने यात्री नाम से ही लिखा। हिन्दी साहित्य में नागार्जुन के नाम से जाने जाते हैं। उनका जन्म 1911 में अपने ननिहाल सतलखा, पोस्ट मधुबनी, जिला दरभंगा (बिहार) से हुआ था। इनके पिता श्री गोकुल मिश्र एक लापरवाह, कठोर हृदय, घुमक्कड़ दरिद्र और अस्थिर चित्त के व्यक्ति थे। नागार्जुन ने बचपन से ही स्वयं अपने ही घर में नारी पर अत्याचार

देखे जो कि उनकी माँ के साथ उनके पिता द्वारा ही किये गये। इन सब परिस्थितियों में छुपी हुयी पीड़ा, समाज में फैली हुयी विसंगतियां तथा राष्ट्रीय संस्कृति और अस्मिता का निरंतर प्रहारों ने नागार्जुन को एक विद्रोही लेखक बना दिया।

उनके बेटे शोभाकांत मिश्र जी ने स्वयं स्वीकारा कि पारिवारिक परिस्थितियों ने ही प्रतिरोध की आवाज को बुलंदियों पर पहुंचाया। वे बचपन से ही यायावर एवं घुमक्कड़ प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्होंने अपने आस–पास नारी का शोषण होते हुए देखा, यही अन्याय, दमन और शोषण जो उन्होंने नारी के ऊपर होते हुए देखा उसका वर्णन अपने लेखन में किया। नागार्जुन के हिन्दी भाषा में प्रकाशित कुल तेरह उपन्यास हैं, इन सभी उपन्यास में कहीं न कहीं नारी की घुटनभरी व्यथा का वर्णन उन्होंने बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में बाल विवाह, अनमेल विवाह, छुआछूत, विधवा समस्या, वेश्या समस्या, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता आदि पर आवाज उठाई है।

नागार्जुन के उपन्यासों में नारी संबंधी समस्याओं में कहीं भी बनावटीपन नहीं लगता। बल्कि उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से संपूर्ण समाज में नारी पर हो रहे अत्याचारों द्वारा यह प्रश्न खड़ा कर दिया है। आज भी समाज में चाहे ग्रामीण हो या शहरी नारी शुरू से ही उलाहनें सुनती आयी हैं। उसे हर परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाने की शिक्षा दी जाती है। वर्तमान में कई स्थानों पर आज भी महिलाओं की यही स्थिति है। भले ही हम शिक्षित हो गये है और हम यह भी दिखावा करते हैं कि हमारे सोचने का तरीका भी बदल गया है, पर हमारा अन्तर्मन ही समझता है कि आज भी पुरुषवादी समाज में महिलाओं के प्रति सोच या नजरिये में कोई बदलाव नहीं आया है और यही नारी की दशा नागार्जुन के उपन्यासों में सटीक बैठती है। गौरी "रतिनाथ की चाची" की नायिका है, एक तरफ तो वह गृहस्थ स्त्री के रूप में सामने आती है जो अधेड़ रोगी पति की मृत्यु के कारण विधवा हो जाती है और अपने ही दुष्कर्मी देवर जयनाथ की कामवासना की शिकार हो जाती है। उसके साथ यह अपराध उसके ही घर में होता है और समाज में उसे ही दोषी ठहरा दिया जाता है। अगर वह मुंह खोलती है तो भी पुरुषवादी समाज में उसे ही कलंकित किया जाता है। इस सब के बावजूद भी वह इस संबंध में कुछ नहीं कहती है। गाँव की औरतें उसे व्यभिचारिणी, कुलटा न जाने क्या–क्या कहतीं हैं। यहां तक कि उसका बेटा उमानाथ भी उसे चरित्रहीन समझता है तथा उसके साथ मारपीट भी करता है, लेकिन वह सब अपमान सहन कर एक परम्परागत गृहिणी की भाँति अपना जीवन व्यतीत कर रही है। अपने मान सम्मान की चिंता न कर गौरी एक जागरूक स्त्री के रूप में दिखाई देती है। गांव में मलेरिया फैलने पर मुफ्त में दवा बांटती है। जमींदारों के विरुद्ध संघर्ष करने वाली क्रांतिकारी किसान सभा संगठन में अपना दो शॉल व फटा कम्बल देकर सहायता करती है तथा अखिल भारतीय सूत प्रतियोगिता में अव्वल आती है और अपने सगे पुत्र से मिले अपमान को पीकर वह अपने भतीजे रतिनाथ पर अपनी ममता उड़ेलती है।

इस प्रकार नागार्जुन ने अपने उपन्यास "रतिनाथ की चाची" में गौरी के रूप में स्त्री के व्यक्तित्व को एक सामाजिक प्रश्न के रूप में सामने रखकर स्वयं उत्तर दिया है कि एक भारतीय नारी तमाम संघर्षों को झेलते हुए भी समाज के प्रति तथा परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती है और नारी का यही संघर्ष उसके व्यक्तित्व को एक सूत्र में बांधे रखता है।

अपने आंचलिक उपन्यासों के द्वारा नागार्जुन ने "नई पौध" में बे–मेल विवाह के भयंकर परिणामों को बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है कि किस तरह गरीब परिवारों में उनकी आर्थिक स्थिति का फायदा उठाया जाता है। चौदह पंद्रह साल की बच्चियों का विवाह अधेड़ उम्र के व्यक्तियों के साथ करवाने के लिए उन पर दवाब बनाया जाता था। ग्रामीण समाज में वहाँ के बड़े–बूढ़ों द्वारा बनाये गये नियम किस तरह स्त्री समाज पर प्रहार करते हैं। पैदा होते ही उनकी इच्छाएं, प्रतिभाएं दबा दी जाती हैं। उन पर समाज की संकीर्ण मनोवृत्तियां थोप दी जाती थीं।

नागार्जुन ने अपने आंचलिक उपन्यासों में समाज में फैली नारी के प्रति अनेक समस्याओं को बड़ी ही सटीकता से चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बे–मेल विवाह, दलित नारियों पर अत्याचार, बाल विवाह, विधवाओं पर होने वाले अत्याचार, जमींदारों द्वारा नारी का शोषण आदि समस्याओं के साथ–साथ उनके ही

परिवार में नारी पर होने वाले शोषण को समाज अपने लेखन के द्वारा उजागर किया जो की बहुत ही सोचनीय हैं। उन्होंने अपने उपन्यास के द्वारा समाज को यह संदेश दिया कि यदि हमारे युवा समझदार तथा शिक्षित हैं तो वह नारी संबंधी इस विकराल समस्या का समाधान नई पीढ़ी को दे सकते हैं।

उनके कथा चरित्र साधारण होकर भी हमारे समाज के बहुत ही असाधारण हिस्से होते हैं। उन्होंने अपने समय और समाज की विसंगतियों को सबके सामने लाने का साहस अपने उपन्यासों में किया है। किस तरह नारी आर्थिक अभावों में पिसती अपनी इच्छाओं को कुचलती हुई भोगवादी भट्टी में झोंक दी जाती है। उनके आंचलिक उपन्यासों में नारी की पीड़ा उनकी मुक्तिकामी, छटपटाहट का बहुत ही गहराई से वर्णन किया है। उन्होंने नारी की वेदना, उनका सामाजिक तिरस्कार, उलाहनों से भरा हुआ उनका जीवन और इस सबके बावजूद भी जीने की लालसा उसकी छटपटाहट का बहुत ही हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। वर्तमान समाज चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी, महिलाओं के प्रति कहीं न कहीं दृष्टिकोण वही है। वह हर जगह उलाहनों का शिकार होती है। जाने–अनजाने में घर के लोग ही बहुत कुछ कह देते है। बचपन से ही उसके दिमाग में बिठा दिया जाता है कि मुझे तो पराये घर जाना है जैसा भी हो वहीं पर सभी के साथ सामंजस्य बैठाना ही है। वह घुटन भरी तिरस्कृत जिंदगी जीने को मजबूर हो जाती हैं और महिलाओं की यही दशा का वर्णन नागार्जुन ने अपने आंचलिक उपन्यासों में बहुत ही सटीकता से किया है। भले ही हम शिक्षित हैं और ये भी दिखावा करते है कि हमारे सोचने का नजरिया ही बदल गया है, लेकिन हमारा अंतर्मन ही समझता है कि आज भी पुरुषवादी समाज में महिलाओं के प्रति सोच में शायद ही उसमें कोई भी बदलाव देखने में आया है।

नागार्जुन ने अपने आंचलिक उपन्यासों से नारी की इसी छटपटाहट का बहुत ही मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। उन्हें इस की कोई भी परवाह नहीं थी कि कोई क्या कहेगा? उन्होंने प्रतिष्ठित परिवारों में सड़ांध मारती कुरीतियों तथा उनकी रूढ़िवादी प्रवृत्तियों पर करारा प्रहार किया है। इससे ये पता चलता है कि उन्होंने अपने उपन्यासों द्वारा नारी पर हो रहे अत्याचारों तथा शोषण को समाज में सामने लाकर खड़ा कर दिया, इसलिये उनकी ये वेदना अति तीक्ष्ण औचित्य की सीमा का उल्लंघन भी कर बैठती है, क्योंकि वे व्यक्तिगत दुःख की अपेक्षा दुःख पर अधिक जोर डालते हैं और यही सच्चे लेखक की पहचान है।

निष्कर्ष

नागार्जुन के ज्यादातर उपन्यासों में कहीं न कहीं स्त्री समस्या को समाज के सामने रखा है तथा उनका समाधान भी खोजा है। उन्होंने बाल विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह वेश्यावृत्ति जैसी समस्या को उठाया है कि समाज की कुछ गलतियों की वजह से नारी का जीवन नारकीय बन जाता है। वे इस अभिशाप को ढोते–ढोते नारकीय जीवन जीने को विवश हो जाती हैं।

इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर हम आधुनिक बन गये हैं, लेकिन समाज की नारी के प्रति मनोवृत्ति में कोई बदलाव नहीं आया है, कहीं न कहीं इसकी झलक हमें देखने को मिल ही जाती है। भले ही हम महिला सशक्तिकरण का डंका पीट रहे हैं, लेकिन जब हम समाचार–पत्र, पत्रिकाओं, समाचार चैनल तथा हमारे आस–पास नजर डालते हैं तो कहीं न कहीं नारी को शोषित ही देखते हैं तब हमें यह प्रतीत होता है कि नागार्जुन के उपन्यासों में नारी का जो चित्रण उस समय दर्शाया है कहीं न कहीं वर्तमान में भी नारी की वही दशा देखने को मिलती हैं। आज लिंगानुपात जिस तरह से बढ़ रहा है, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, जैसे अपराधों में भी कोई कमी नहीं आयी हैं। पहले यह शोषण बंद घरों में होता था और आज यह शोषण बीच चौराहों पर होने लगा है, तो कहीं न कहीं नारी के प्रति यह शोषण मानव समाज की मानसिक संकीर्णता को ही दर्शाता है।

संदर्भ सूची

1. भट्ट, प्रकाश चन्द्र, (1974) *''नागार्जुन जीवन और साहित्य''* सेवा सदन प्रकाशन जिला मंदसौर (म.प्र.)।
2. मिश्र, शोभाकांत, (1996) *''नागार्जुन मेरे बाबूजी,''* राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली।

3. सिंह, शकुन्तला (1990) नागार्जुन के उपन्यासों में आंचलिकता,'' शांति प्रकाशन इलाहाबाद।
4. शोभाकांत (1994) *''मेरे साक्षात्कर, नागार्जुन,''* किताब घर नई दिल्ली।
5. शोभाकांत (2003) *''नागार्जुन रचनावली (4),''* राज कमल प्रकाशन नई दिल्ली 2003
6. शोभाकांत (2003) *''नागार्जुन रचनावली (5),''* राज कमल प्रकाशन नई दिल्ली 2003

****